



**ASPIRATION AND ACTUALITY IN MANJU KAPUR'S NOVEL
DIFFICULT DAUGHTERS : A STUDY IN CONTRAST**

Dr. Sobal Rose G.Veliannur

Associate Professor, Head, Department of English,
Nutan Adarsh Arts, Commerce & Smt. M.H. Wegad Science College,
Umrer, Nagpur Dist. Maharashtra State. India. Pin: 441203
Email Id: sobalrose@gmail.com Mobile No.9422556640

Abstract :

Manju Kapur, one of the most prolific women writers of contemporary Indian Writings in English, has established her niche as an artist par-excellence in transforming the traditional image of women. In the novel *Difficult Daughters* Manju Kapur speaks about the relentless sufferings of women encompassing three generations in the annals of India's struggle for independence. The women protagonists in the narrative namely Kasturi, Virmati and Ida epitomize three phases of India's Independence Movements. The protagonist Kasturi, Virmati's mother, symbolizes the pre-independence era. Virmati, in quest of lasting solace, seeks refuge in Nahan, the headquarters of Sirmaur. Virmati's growing sense of isolation leads her to enter into a relationship, which at length proves catastrophic. It is none other than Ida, Virmati's daughter, who recognizes her mother's futile struggle for identity.

Key words : Stratagems, niche, discomfiture, disharmonizing, encompassing, proxy parenthood, acclimatize, tribulations, gawk.

Manju Kapur, one of the most prolific women writers of contemporary Indian Writings in English, has established her niche as an artist par-excellence in transforming the traditional image of women. There is a paradigm shift in the narrative stratagems of most of the women writers of contemporary Indian Writings in English today. Perhaps this change is effected by the Western feminist movements and its influences on the contemporary Indian women writers. The outmoded method of storytelling is abandoned by most of the contemporary writers. In conformity with the societal renaissances, most of the contemporary writers have evolved alternative paradigm of novel writing. Disharmonizing with the

conventional milieu of depicting women in frailty, the contemporary writers in general have switched over to the depiction of female characters in new perspectives. In this context it is worth quoting Meena Shivwadar's assertion in her book *Image of Women in the Indo Anglian Novel* that, "Tradition, transition and modernity are the stages through which the woman in Indo Anglian novel is passing".¹ Manju Kapur, under the influence of the mismatched repercussions of tradition and modernity, succeeds to identify contemporary women's sufferings.

In the novel *Difficult Daughters* Manju Kapur speaks about the relentless sufferings of women encompassing three generations in the annals of India's struggle for independence. The women protagonists in the narrative namely Kasturi, Virmati and Ida epitomize three phases of India's Independence Movements, "Set against the bloody backdrop of partition, in the cities of Amritsar and Lahore, *Difficult Daughters* remains a powerful portrait of a society where shame is more important than grief, pragmatism goes hand in hand with superstition and a pregnant wife has to share a bed with her mother in law."² The protagonist Kasturi, Virmati's mother, symbolizes the pre-independence era and is depicted as a victim of the male-dominated society. Kasturi, though an orthodox woman, settles herself within the shackles of married life. She wants to up-bring her offspring according to her whims and fancies. Kasturi never allows her children to enjoy unrestrained freedom outside and instead she wants her children to lead contended life within the constraints of orthodox patriarchal family set-up. However, Virmati, daughter of Kasturi, does not want to be domesticated under the traditional patriarchal dominance. Virmati, although a rebellious

समेकित बालविकास सेवा योजना - शाश्वत और समावेशी विकास का साधन

प्रा. मोरेस्वर वि. शेंडे*

सारांश :- देश का शाश्वत और समावेशी विकास दुनिया के हर देश के सामने सबसे बड़ी चुनौती है, यह समय की मांग है। जब देश विकास कर रहा है तो देश के सभी लोगों को उस विकास का लाभ मिलना चाहिए। उसके लिए देश के कमजोर और उपेक्षित तत्वों पर ध्यान देने की जरूरत है। भारत में कुपोषण के लिए समेकित बाल विकास सेवा योजना 1975 से लागू है। इस शोध पत्र में समेकित बाल विकास योजना, सतत एवं संतुलित विकास, असमानता तथा इस योजना का प्रभावी क्रियान्वयन किस प्रकार सतत एवं संतुलित विकास का आधार हो सकता है, आदि बिंदुओं के गहन अध्ययन के बाद निष्कर्षों को प्रस्तुत किया गया है।

परिचय :- भारत विविधताओं से भरा देश है। इसे कई क्षेत्रों, बोलियों, भाषाओं, विचारों, आर्थिक, धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक, शैक्षिक और स्वास्थ्य संबंधी विषमताओं के देश के रूप में जाना जाता है। इस असमानता के कारण देश के सतत और संतुलित विकास में कठिनाइयाँ आ रही हैं। इसके लिए हर तरह से असमानता को खत्म करना समय की मांग है। सरकारी आंकड़ों के अनुसार, भारत में अभी भी 26.97 मिलियन गरीब लोग हैं और ग्रामीण क्षेत्रों में गरीबी (25.70 प्रतिशत) शहरी क्षेत्रों की गरीबी (13.7 प्रतिशत) से अधिक है। अमीर और गरीब के बीच की खाई चौड़ी होती जा रही है। अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन के एक सर्वेक्षण के अनुसार, भारत में 10p लोगों के पास देश की 70p संपत्ति है। कोविड-19 महामारी का आर्थिक असमानता पर गहरा प्रभाव पड़ा है। दुनिया में 15 करोड़ लोग अत्यधिक गरीबी में जी रहे हैं। ऑक्सफैम की 2021 की रिपोर्ट के मुताबिक कोरोना काल में भारत के पूंजीपति वर्ग की संपत्ति में 35 प्रतिशत की वृद्धि हुई। अरबपतियों की संख्या तो बढ़ी लेकिन गरीबों की संख्या भी बढ़ी। देश में 26 प्रतिशत लोगों द्वारा 3000 रुपये से कम पर जीवन यापन करना भारी आर्थिक विषमता का द्योतक है। चूंकि खाद्य सुरक्षा, पोषण, स्वच्छ जल आपूर्ति, स्वच्छता स्वास्थ्य को प्रभावित करती है, इसलिए अच्छे स्वास्थ्य के लिए उनकी उपलब्धता और समान वितरण आवश्यक है। कुपोषण की समस्या खाद्य असुरक्षा और गरीबी से जुड़ी है। स्वास्थ्य के साथ-साथ समग्र विकास पर विचार करते समय समानता पर विचार किया जाना चाहिए। विकास की नई नीति अपनाते समय न केवल विकास की दर बल्कि समाज के विभिन्न वर्गों की जरूरतों पर भी विचार किया जाना चाहिए। स्वतंत्रता के बाद की अवधि में, भारत में गरीबी अधिक थी। भोजन की कमी के कारण कुपोषण, शिशु मृत्यु दर और मातृ मृत्यु दर में भी वृद्धि हुई है। पर्याप्त और उचित भोजन की कमी के कारण व्यक्ति कुपोषित हो गया और उसे कई समस्याओं का सामना करना पड़ा। इन समस्याओं के समाधान के लिए भारत सरकार ने 2 अक्टूबर 1975 से समेकित बाल विकास सेवा योजना की शुरुआत की। इस योजना के माध्यम से लाभार्थियों तक स्वास्थ्य और शैक्षिक सेवाएं पहुंचाने की शुरुआत की गई है। 1977 में, भारत में एकीकृत बाल विकास सेवा परियोजनाओं की संख्या में वृद्धि की गई। ये परियोजनाएं धीरे-धीरे भारत के सभी शहरों और तालुकों में शुरू की गईं।

शोध के उद्देश्य :-

1. समेकित बाल विकास सेवा योजना के क्रियान्वयन की जांच करना।
2. भारत में असमानता का अध्ययन करना।
3. शाश्वत और समावेशी विकास के लिए समेकित बाल विकास योजना के प्रभावी क्रियान्वयन की उपयोगिता सिद्ध करना।

अनुसंधान की विधियां :- प्रस्तुत शोध पत्र में द्वितीयक सामग्री का प्रयोग किया गया है। इसमें शोध लेख, ग्रंथ सूची, पत्रिकाएं, समाचार पत्र लेख और रिपोर्ट आदि शामिल हैं।

समेकित बाल विकास सेवा योजना :- समेकित बालविकास सेवा योजना 0 से 6 वर्ष की आयु के बच्चों के समग्र विकास, उनके पोषण और स्वास्थ्य की स्थिति में सुधार, स्कूल छोड़ने वालों की संख्या को कम करने और बच्चों की देखभाल करने के लिए माताओं को सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। इस योजना के माध्यम से

*सहायक प्राध्यापक व वाणिज्य विभागप्रमुख नूतन आदर्श कला, वाणिज्य आणि श्रीमती म. ह. वेगड विज्ञान महाविद्यालय, उमरेड जि. नागपुर।

भारतातील दहशतवाद : कारणे आणि उपाय

भारतातील दहशतवाद : कारणे आणि उपाय

प्रा. लोमेष ज्ञानेश्वर बावनकुळे राज्यपास्त्र विभागप्रमुख, नुतान आदर्श महाविद्यालय, उमरेड

पाकिस्तानकडून नेहमीच भारतात विविध कारवायाद्वारे दहशतवाद होत असे आणि होत आहे. भारताने आंतरराष्ट्रीय स्तरावर दहशतवादाचा प्रश्न उचलला परंतु केव्हाच त्याला आंतरराष्ट्रीय स्तरावरून दाद मिळाली नाही एवढेच नाही तर भारताने केलेली दहशतवादाची उचलवांगडी ही केवळ काल्पनीक किंवा भारतातीलच अंतर्गत राजकारण आहे अशा प्रकारची मतेमतांतरे अमेरिकेसारखी देणू लागले होते. परंतु 11 सप्टेंबर 2001 या दिवशी अमेरिकेच्या वर्ल्ड ट्रेड सेंटर व लश्कराचे मुख्यालय असलेल्या पेन्टॅगॉनवर जोरदार आक्रमण झाले. आपल्याच घरात अजगर पाळून त्याला लहानाचे मोठे केल्यावर त्या अजगराने आपल्यालाच गिळाले असेच अमेरिकेत झालेल्या दहशतवादी हल्ल्याने सिध्द केले. ज्या जागाला भारतातील दहशतवाद कधी दिसला नाही तो दहशतवाद अमेरिकेवर झालेल्या हल्ल्याने मात्र जगाला काल्पनिक वाटू लागणारा दहशतवाद वास्तविक वाटू लागला.

दहशतवाद तसा तर निंदनीय, वाईट, आयोग्याचा आहे, होता आणि राहिल.परंतु अमेरिकेतील दहशतवादी हल्ल्याने मात्र भारताच्या दृष्टिने सकारात्मक बाब घडून आली म्हणावी लागेल ती म्हणजे या हल्ल्याने डोळ्याला आणि काणाला झापडे लावून बसलेल्या देशांची ही झापडे तुटून पडली आणि दहशतवाद काय असते याची अनुभूती आली.

भारतातील दहशतवाद : भारताची अंतर्गत सुरक्षितता आणि उपाययोजना :

दहशतवाद राष्ट्रीय असो की, सीमेपलीकडचा असो, या दोन्ही प्रकारांमधून देशाच्या राष्ट्रीय सुरक्षिततेपुढे आव्हान उभे राहते. या दोन्ही प्रकारच्या दहशतवादी कारवायांसाठी देशातीलच असंतुष्ट तरुण-तरुणींचा उपयोग केला जातो. आज भारताच्या वेगवेगळ्या राज्यात वेगवेगळ्या प्रकारच्या दहशतवादी संघटना कार्यरत होत्या व आहेत.

घरात घुसून हत्या करणे, मुलामुलींचे अपहरण करणे, अचानक आघात करणे, बॉम्बस्फोट घडवून आणणे, अंदाधुंद गोळीबार करणे, एखाद्याला झाडाला टांगून फाषी देणे आणि प्रेत झाडाला लटकत राहु देणे यासारखे विध्वंसक भय निर्माण करणारे कार्य या दहशतवादी संघटना करतांना दिसतात. भारतातील दहशतवादामध्ये क्रांतिकारी दहशतवाद, नक्षलवादी दहशतवाद वार्षिक दहशतवाद, धार्मिक कट्टरवादी दहशतवाद, फुटीरवादी दहशतवाद, प्रशासकीय दहशतवाद, गटवादी दहशतवाद अशा प्रकारच्या दहशतवादांचा समावेश होतो. या सर्व प्रकारच्या दहशतवादी कारवायांमुळे भारताची अंतर्गत सुरक्षितता मोठ्या प्रमाणात धोक्यात येतांना दिसून येते. त्याचप्रमाणे या दहशतवादी कारवायांमुळे भारताच्या सर्वांगीण विकासकार्यापुढे अडथळा निर्माण झालेला आहे. त्यामुळे या दहशतवादाची सर्वच स्तरांवर पाळेमुळे नश्ट करण्याची सध्या वेळ आलेली आहे.

याषिवाय धार्मिक अस्तित्वासाठी लढणाऱ्या अकाली दलाने स्वतंत्र खलिस्तान राष्ट्रांची कल्पना राजकीय दृष्ट्या विस्तारित करून पुढे आणलेली दिसते. त्यासाठी त्यांनी भारतसरकारच्या विरोधात संघर्ष सुरू केला होता. या संघर्षामुळे भारताची अंतर्गत सुरक्षितता मोठ्या प्रमाणात धोक्यात आल्यामुळे त्यांच्या विरोधात उपाययोजना म्हणून तत्कालीन पंतप्रधान श्रीमती इंदिरा गांधी यांनी 'ऑपरेशन ब्लू स्टार' अंतर्गत त्यांच्यावर कार्यवाही केली होती. त्यातूनच श्रीमती गांधीची हत्या करण्यात आली होती. त्यानंतर पंजाबमधील दहशतवाद नश्ट करण्यासाठी राजीव गांधींनीही मोठ्या प्रमाणात प्रयत्न केले पण त्यामध्ये त्यांना यश मात्र आले नाही. 'सीमी' म्हणजे 'स्टुडंट्स इस्लामिक मूव्हमेंट ऑफ इंडिया' भारतविरुद्ध



Cyber Crime and Frauds: An obstacle in Digital Commerce

Dr. Gajanan G. Babde,
Assistant Professor,
Department of Commerce,
Nutan Adarsh Arts, Commerce &
Smt. M.H. Wegad Science College,
Umred, Dist. – Nagpur (MH).

D. Rupesh W. Khubalkar
Assistant Professor,
Department of Commerce,
Nutan Adarsh Arts, Commerce &
Smt. M.H. Wegad Science College,
Umred, Dist. – Nagpur (MH).

ABSTRACT

Digital Commerce is the most significant term in the current Covid-19 Pandemic. Digital commerce is playing an important role in sustaining the economic growth of several developed and developing countries in spite of worldwide lockdown. India is no exception. Digital transactions are increased at greater extent in Covid-19 period as compared to the pre Covid-19 period. Due to Covid-19 Pandemic, the overall use of the internet has increased. The transactions which were done manually are now being done online. Cyber Crime and Frauds have increased due to unsecured use of digital transactions. There is a need for continuous awareness regarding cybercrime and frauds. This paper aims to discuss the increased graph of Cyber Crime and Frauds in digital Commerce during Lockdown due to Covid-19 Pandemic.

Keywords: Digital transactions, Covid-19, Pandemic, Prevention, Lockdown

Introduction

India has the 2nd largest internet population in the world. In India, during the lockdown period digital transactions have increased tremendously. According to the RBI Report, "The share of digital transactions in the total volume of non-cash retail payments increased to 98.5 per cent during 2020- 21, up from 97.0 per cent in the previous year." The covid-19 pandemic has accelerated the digital transactions and digital payment methods such as UPI, credit/debit cards, mobile banking, etc., across the country. But, Digital Commerce has an obstacle to Cyber Crime and Cyber Fraud. Cyber crime is also increasing with the increase of digital commerce. Cyber crimes have no borders and have evolved at a pace at par with emerging technologies. The most targeted sectors for cyber crime and fraud are banking and finance. In the Covid-19 pandemic, most of the services are moving to the internet, hence, risk is extended to other sectors as well.

Data of Cyber Crime During Covid Pandemic

As per the data maintained on National Cyber Crime Reporting Portal, total 3,17,439 cybercrime incidents and 5,771 FIRs have been registered from 30 August 2019 to 28 February 2021 in the country. It includes 21,562 cybercrime incidents and 87 FIRs in Kamataka and 50,806 cybercrime incidents and 534 FIRs in

JETIR.ORG

ISSN: 2349-5162 | ESTD Year: 2014 | Monthly Issue



JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)

An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

A Study of impact of COVID-19 on Education Sector

Dr. Gajanan G. Babde
Assistant Professor
Nutan Adarsh Arts, Commerce &
M. H. Wegad Science College,
Umred, Nagpur.

Abstract

All learning institutions pre-maturely closed on 20 March 2020 and all Indian citizens advised to self-isolate mean quarantine in a bid to control the spread of COVID-19. The closure of schools, colleges and universities not only interrupts the teaching for students around the world; the closure also coincides with a key assessment period and many exams have been postponed or cancelled.

Internal assessments are perhaps thought to be less important and many have been simply cancelled. But their point is to give information about the child's progress for families and teachers. The loss of this information delays the recognition of both high potential and learning difficulties and can have harmful long-term consequences for the child.

Results of this research paper revealed that there is likely to be a drop in the pass percentage of Secondary & Higher Secondary school students in this year's examinations.

Keywords: COVID-19, Minister of States, Government of India, validity and reliability

Introduction

Around mid-March 2020, the Government of India through the Minister of States has announced at a press briefing that all schools, colleges and universities would close indefinitely amid fears of the Coronavirus (COVID-19) outbreak that had reportedly ravaged most parts of China, United States of America, Italy, Spain and other parts of Europe and Africa.

Associate Professor
M. S. Nagarkar

Nutan Adarsh Arts Comm. &

Smt. M. H. Wegad Science College, Umred, Nagpur

EFFECT OF SELF-PLACEMENT OF HABITUAL BUYING PRODUCTS ON THEIR SALES

Dr. Gajanan Babde, Assistant Professor, Nutan Adarsh Arts, Commerce & M. H. Wegad, Science College, Umred, Nagpur.

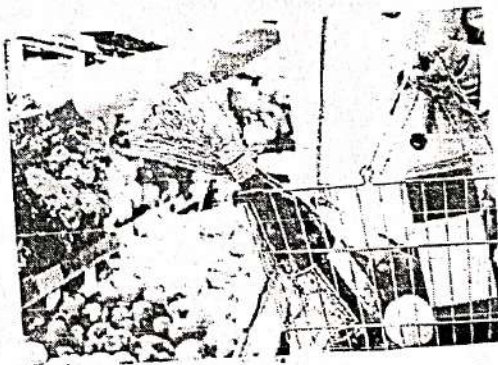
ABSTRACT

Consumer behavior is the study of individuals, groups, or organizations and the processes they use to select, secure, and dispose of products, services, experiences, or ideas to satisfy needs and the impacts that these processes have on the consumer and society. It blends elements from psychology, sociology, social anthropology and economics. It attempts to understand the decision-making process of buyers, both individually and in groups. It studies characteristics of individual consumers such as demographics and behavioral variables in an attempt to understand people's wants. It also tries to assess influences on the consumer from groups such as family, friends, reference groups, and society in general. This empirical study contributes to a vital comprehension of the impact of dissimilar factors on consumer buying behaviors.

The numerous independent variables in electronic home appliances market in India are deeply analyzed. The factors that are affecting the consumer behavior in electronic home appliances markets in India have been taken as the empirical study of this research. The key findings of this study designates that, overall, the set of self determining variable are weakly associated with the self determining variable. The profound analysis institutes those social and physical factors along with marketing mix elements are sturdily associated with consumer buying behavior. The consumer decision making rules discovery is made possible through these analyses. The results shall support the manufacturers and electronic home appliances retailers in comprehending consumer behavior and enhancing the satisfaction of the consumers.

Introduction

Consumers or the Customers are valuable assets for any organization. Consumer is an individual or group of individuals who select, purchase, use, or dispose of products, services, ideas, or experiences to satisfy needs and desires. In other words, Consumers are the eventual destination of any products or services. The study of these individuals, groups, or organizations is what we call Consumer behavior. The processes by which these organizations select, secure, and dispose of products, services, experiences, or ideas to satisfy needs and the impacts that these processes have on the consumer and society. It blends elements from psychology, sociology, social anthropology and economics. It attempts to understand the buyer decision making process, both individually and in groups. It studies characteristics of individual consumers such as demographics and behavioral variables in an attempt to understand people's wants. It also tries to assess influences on the consumer from groups such as family, friends, reference groups, and society in general. Customer behavior study is based on consumer buying behavior, with the customer playing the three distinct roles of user, payer and buyer (Anju Thapa, 2012). If the company in India wants to attain commercial success in the electronic home appliances market, it is important that its managers have to comprehend consumer behavior. The association between consumer behavior and marketing strategy is accentuated because the success of companies' marketing strategies depends upon managers' understandings of consumer behavior.



M. S. Nagarkar
Associate Professor
M. S. Nagarkar
Nutan Adarsh Arts Comm. &
Smt. M. H. Wegad Science College, Umred

Customer Relationship Management a Strategic Tool: An empirical Study with reference to four wheeler automobile industry in Nagpur City

Dr. Gajanan G. Babde

Assistant Professor

Nutan Adarsh Arts, Commerce & M. H. Wegad Science College, Umred, Nagpur.

Introduction:

The entire focal point of Customer Relationship Marketing is to build positive experiences with customers to keep them satisfied and happy. Customer Relationship Marketing refers to the principles, practices and guidelines that an organization follows when interacting with its customers. The whole relationship encompasses direct interactions with customers through sales and services. To enhance the customers overall experience Customer Relationship Management plays a vital role.

Customer Relationship Management is the branch of management that centers on elaborating the term and putting its associated principles to work for achieving the strategic objectives. CRM allows an organization to forge new relationships, and better manage existing relationships, with all the stake holders like customers, dealers, distributors, suppliers and others. According to Roger Joseph Baran and Daniel P. Strunk in the book; Principles of Customer Relationship Management; CRM is about effectively managing the customers with the great care to satisfy the customers.

Customer Relationship Management is the concept of a planning and a structure to manage the relationship with individual customers. A CRM tool allows a business to manage customer relationships in a structured and organized way by using software that is normally hosted inhouse or on demand, in the cloud. Customer Relationship Management is a system for managing a company's interactions with current and future customers. It involves use of technology to organize, automate and synchronize sales, marketing, customer service activities, and technical support.

Customer Relationship Management provides leverage in the following areas like: □

- 1) Managing customer enquiries and leads. □
- 2) Managing communication with prospects and current customers.
- 3) Market Segmentation. □
- 4) Managing promotions and marketing campaigns.
- 5) Managing account of loyal customers.

The easiest way of making customers feel more valued and part of two-way relationship is to continually make them feel valued for their business and loyalty. To create value and increase

Associate Professor

M. S. Nagarkar

Nutan Adarsh Arts Comm. &

Smt. M. H. Wegad Science College, Umred.

IMPACT OF COVID-19 PANDEMIC ON CONSUMER BUYING BEHAVIOUR

V.V. Nagbhidkar¹ and R.W. Khubalkar²

¹Department of Commerce, N.H. College, Bramhapuri, Dist.- Chandrapur (MH)

²Department of Commerce, Nutan Adarsh Arts, Commerce & Smt. M.H. Wegad Science College, Umred, Dist.- Nagpur (MH)

¹viveknagbhidkar@gmail.com

ABSTRACT

Consumers are deeply concerned about the impact of COVID-19, both in terms of health and economics. The general public responds in a number of ways, with opposing approaches, behaviours, and purchasing habits. People all throughout the world are terrified as they try to adjust to a new normal. The COVID-19 pandemic, as well as the lockdown and social distance orders, have disrupted consumer buying and their behaviours. Consumers are learning how to form and maintain new habits. The major goals of study are to look into customer purchasing habits. The primary data was collected from customers via a Google Forms questionnaire, with a sample size of 108 respondents and a convenient sampling method is used. The Covid-19 problem was completely halted because to consumer purchasing behaviour. The global pandemic of Covid-19 has wreaked havoc on the global economy and healthcare, as well as creating anxiety among billions of people. The major findings of this study indicated that the consumer behaviour is very much changed and consumers have started spending more on essential and health related goods.

Keywords: - COVID-19, consumer behaviour, Online Service, Investment, Lockdown.

Introduction

The world has been touched by the covid-19 pandemic. It has had an impact on people all across the world. People, communities, brands, and companies have all been affected by the pandemic and lockdown. People's daily lives have changed in unimaginable ways all throughout the world. However, as businesses try to discover answers, it's crucial to remember that Global Consumers were already changing at a breakneck pace. This process is moving faster than anyone expected. As a result of the crisis, India's consumer optimization has decreased. Customers have continued to be concerned about their own and their families' health and safety when limitations begin to be lifted. Online shopping for practically everything increased as essential items and in-house entertainment increased. They have gradually adopted digital and less-physical contact activities while at home, such as viewing online streaming shows and using online payment systems, which they wish to continue post-COVID-19 pandemic. Consumer shopping habits have changed as a result of the lockdown, with consumers spending more on health and hygiene products, attempting to limit product availability, and opting for home delivery rather of physical store visits. The current crisis is affecting consumer choices for

brands and categories, as well as purchasing behaviours and expenditure. This pandemic has created an unexpected scenario.

In the space of a few weeks, the virus is reshaping the consumer products market in real time, hastening long-term primary trends. New habits created now, according to the research, will last beyond the crisis, forever affecting what we value, how and where we shop, and how we live and work. This situation is still evolving; but, by identifying current trends, we can evaluate what consumer products manufacturers should do now to prepare for the future. COVID-19 was causing concern among consumers, both in terms of health and economics. People respond in a variety of ways and have a variety of purchasing habits. People respond in a variety of ways and have a variety of purchasing behaviours. People all throughout the world are terrified as they try to adjust to a new normal. As individuals evaluate what this crisis means for them, but more importantly, what it means for their families and friends, as well as society as a whole, fear levels rise a risky situation causes human behaviour to shift in unexpected directions, with other parts of behaviour remaining constant. Because the COVID-19 pandemic is not a typical crisis, several methods were implemented to restrict the disease's spread,



KEY ASPECTS OF NEP-2020

Dr. Rupesh W. Khubalkar

Dept of commerce
Nutan Adarsh Arts, Commerce &
Smt.M.H. Wegad Science College,
Umred

Dr. Amol G. Awandkar

Dept of Economics
Nutan Adarsh Arts, Commerce &
Smt.M.H. Wegad Science College
Umred

Abstract : On the 29th of July 2020, the Government of India approved the National Education Policy 2020. The new National Education Policy (NEP) 2020 will bring ambitious changes that could transform the education system. In the months and years ahead, the reduced successful implementation of this policy will show a paradigm shift in the education sector. The government hopes to make schooling accessible to all with the support of NEP 2020. The aim of the policy is to reduce the dropout rate among students. This is provision of equitable and inclusive education. The policy's implementation, on the other hand, will begin immediately, with the Ministry of Human Resource Development in India being renamed the Ministry of Education. Other implementations will be phased in over the next few months. That is to say, there have been numerous substantial changes involving over 100 action points. The entire New Policy, on the other hand, aims to reform the educational system by 2040. But the key here is good implementation and execution. This research will throw light on the significance of new educational reforms and positive and negative aspects of NEP 2020.

Keywords: NEP 2020, School Education, Higher Education, Multidisciplinary, Privatization.

Introduction :

After 34 years, the Union Cabinet of India approved the National Education Policy 2020 (NEP 2020), which supersedes the preceding National Policy on Education, 1986. By 2021, this policy intends to completely alter India's educational sector. NEP 2020 includes revolutionary improvements in the country's schools and higher education institutions. In both rural and urban areas, NEP 2020 will provide a comprehensive framework for basic through higher education, as well as vocational training. The new policy aims to improve the country's educational framework and orientation in the next few years. This new education policy intends to achieve universal education in India by 2030, with a gross enrolment ratio of 100% for school education and 50% for higher education by 2025. Given that there are over 350 million Indians in school or college today, the NEP calls for a massive implementation that has never been attempted anywhere else in the world.



भारतीय स्टेट बँकेचे निगमित सामाजिक जबाबदारी अंतर्गत योगदान

डॉ. रुपेश वामनराव खुबाळकर*

सहाय्यक प्राध्यापक, वाणिज्य विभाग
नूतन आदर्श कला, वाणिज्य व श्रीमती म. ह. वेगड विज्ञान
महाविद्यालय, उमरेड

डॉ. गजानन गोपलराव बाबडे**

सहाय्यक प्राध्यापक, वाणिज्य विभाग
नूतन आदर्श कला, वाणिज्य व श्रीमती म. ह. वेगड विज्ञान
महाविद्यालय, उमरेड

सारांश

निगमित सामाजिक जबाबदारी अंतर्गत व्यवसाय संघटनाद्वारे त्यांच्या व्यवसाय कार्यासोबत सामाजिक, आर्थिक आणि पर्यावरणविषयक समस्या सोडवण्यासाठी प्रयत्न केले जात आहे. सार्वजनिक क्षेत्रातील काही कंपन्या, बँका ह्या अगोदरपासून सामाजिक दायित्व निमित्तिण्यासाठी प्रयत्न करीत आहे. कंपनी कायदा 2013 नुसार कंपन्यांसाठी मागील सतत तीन वर्षांच्या सरासरी निव्वळ नफ्याच्या कमीत कमी 2 टक्के निगमित सामाजिक जबाबदारीवर खर्च करणे बंधनकारक करण्यात आले आहे. निगमित सामाजिक जबाबदारी अंतर्गत भारतीय स्टेट बँकेने केलेली कामगिरी प्रशंसनीय आहे. कोविड-19 च्या काळात भारतीय स्टेट बँकेने सामाजिक जबाबदारीचे मान ठेवून सहाय्य केले आहे. प्रस्तुत शोधनिबंधात भारतीय स्टेट बँकेने निगमित सामाजिक जबाबदारी अंतर्गत केलेल्या कार्याचे अध्ययन केले आहे.

मुख्य शब्द

सामाजिक जबाबदारी, आर्थिक विकास, भारतीय स्टेट बँक, योगदान, कोविड-19

प्रस्तावना

व्यावसायिक क्षेत्राचा मुख्य उद्देश व्यवसाय करून नफा कमविणे आहे. परंतु व्यवसायाची सामाजिक जबाबदारी सुद्धा आहे. व्यवसायाद्वारे त्यांच्या व्यवसाय कार्यासोबत सामाजिक आणि पर्यावरणविषयक समस्या सोडवण्यासाठी प्रयत्न करणे गरजेचे आहे. टाटा, रिलायन्स सारख्या कंपन्या तसेच निगमित संस्था सामाजिक जबाबदारीचे मान ठेवून सामाजिक कार्यात योगदान देत आलेल्या आहेत. महात्मा गांधींनी सामाजिक-आर्थिक वाढीस मदत करणारी ट्रस्टीशिपची संकल्पना मांडली होती. त्याच प्रेरणेतून आता कंपनी कायदा 2013 द्वारे मोठ्या कंपन्यांना 'निगमित सामाजिक जबाबदारी' ची तरतूद करणे बंधनकारक करण्यात आले आहे. निगमित सामाजिक जबाबदारी म्हणजे कंपन्या आता स्वेच्छेने समाजाच्या विकासासाठी व देशाच्या आर्थिक प्रगतीसाठी योगदान करतील. कोविड-19 च्या परिस्थितीत अनेक कंपन्यांनी सामाजिक जबाबदारीचे मान ठेवून सहाय्यता केली आहे.

उद्देश

शोधनिबंधाचे उद्देश पुढीलप्रमाणे आहेत.

- निगमित सामाजिक जबाबदारीचे अध्ययन करणे.

- निगमित सामाजिक जबाबदारी अंतर्गत भारतीय स्टेट बँकेच्या योगदानाचे अभ्यास करणे.

संशोधन पद्धती

शोध निबंधासाठी माहितीचे संकलन पुस्तके, मासिक, वर्तमानपत्र व वेबसाईट वरून घेण्यात आली आहे.

निगमित सामाजिक जबाबदारी (Corporate Social Responsibility - CSR)

भारतीय कंपनी कायदा, 2013 च्या कलम 135 तरतुदीनुसार 1 एप्रिल 2014 पासून कंपन्यांसाठी 'निगमित सामाजिक जबाबदारी - CSR' चे निर्धारण करण्यात आले आहे. निगमित सामाजिक जबाबदारीसाठी प्रत्येक कंपनीच्या संचालक मंडळाला एक 'निगमित सामाजिक जबाबदारी समिती' तयार करणे बंधनकारक आहे. या समितीत सार्वजनिक कंपनीसाठी कमीत कमी तीन संचालक तर खाजगी कंपनीसाठी कमीत कमी दोन संचालक राहतील ज्यापैकी एक स्वतंत्र संचालक राहिल. खालील कंपन्यांसाठी मागील सतत तीन वर्षांच्या सरासरी निव्वळ नफ्याच्या कमीत कमी 2 टक्के निगमित सामाजिक जबाबदारीवर खर्च करणे बंधनकारक राहिल.

➤ ज्या कंपनीची शुद्ध संपत्ती 500 कोटी रुपये किंवा त्यापेक्षा जास्त असेल, किंवा

➤ ज्या कंपनीची वार्षिक उलाढाल 1000 कोटी रुपये किंवा त्यापेक्षा जास्त असेल, किंवा

➤ अशी कंपनी, जिचा निव्वळ नफा 5 कोटी रुपये किंवा त्यापेक्षा जास्त असेल.

निगमित सामाजिक जबाबदारी अंतर्गत खालील कार्य करण्यासाठी खर्च केल्या जाऊ शकतो:

- उपासमारी आणि दारिद्र्य, निर्मूलनासाठी.
- शिक्षणाचा प्रसार करण्यासाठी.
- स्त्री -पुरुष समानतेला प्रोत्साहन देणे आणि महिलांचे सक्षमीकरण करणे.
- बालमृत्यू दर कमी करणे.
- मातृ आरोग्य सुधारणे.
- विषाणूजन्य रोग, मलेरिया व इतर रोग दूर करणे.
- पर्यावरण सुरक्षा निश्चित करणे.
- रोजगार, व्यावसायिक कौशल्ये, सामाजिक व्यवसाय प्रकल्प विकसित करणे.
- प्रधानमंत्री राष्ट्रीय मदत निधी किंवा सामाजिक-आर्थिक विकासासाठी केंद्र सरकार किंवा राज्य सरकारांनी स्थापन केलेल्या इतर कोणत्याही निधीमध्ये योगदान देणे.

Post-Merger Analysis of State Bank India

Dr. G. G. Babde¹,

Assistant Professor, Nutan Adarsh Arts & Commerce College,
Umred, dist.- Nagpur.

Dr. R. W. Khubalkar

Assistant Professor, Nutan Adarsh Arts & Commerce College,
Umred, dist.- Nagpur.

ABSTRACT

SBI was the largest bank and number one in ranked in market share of Deposits, Advances, Branches and Employees before Merger. On 1st April, 2017 the Government merged all the five associate banks namely State Bank of Hyderabad, State Bank of Travancore, State Bank Mysore, State bank of Patiala and State bank of Bikaner and Jaipur is merged in State bank of India with Bhartiya Mahila Bank. Due to Merger the area of service of SBI is more widened than Pre-Merger. After the 3 years of merger, the Merged Entity SBI is now providing its services through 22,141 branches, 58,555 ATMs & ADWMs (Automated Deposit & Withdrawal Machines CDMs & Recyclers) to the 44.89 crore customers. The benefits of Merger of SBI are getting now. This research paper focuses on the impact of Merger on SBI after three year of merger. It is analyzed whether merged entity is navigating towards predefined goal or not. This research paper is comparatively analyzing the branches, employees, customers and financial performance and position of SBI through Pre-Merger period and Post-Merger period.

KEYWORDS

SBI, Merger, Associates Bank, NPA, Net Profit.

1. INTRODUCTION

The Banking Sector is the backbone of Indian Economy. The Indian banking system is now consists of 12 public sector banks, 22 private sector banks, 46 foreign banks, 56 regional rural banks (RRB), 53 Scheduled State co-operative banks, 1485 urban cooperative banks and 96,000 rural cooperative banks in addition to cooperative credit institutions. As of August 2020, the total number of ATMs & ADWMs in India increased to 2,09,110. Indian Banking Industry currently has a total of 136,412 branches in India on Dec 2016 and 15,71,440 employees on 31st March 2016 and nearly 171 branches abroad. According to Reserve Bank of India (RBI), Indian Banking Industry manages an aggregate deposit of Rs. 140.20 lakh crore and bank credit of Rs. 102.19 lakh crore as on 31st July 2020. Out of which the market share of State Bank of India (SBI) was 22.84% in Deposits, 19.69% in Advances.



Cyber Crime and Frauds: An obstacle in Digital Commerce

Dr. Gajanan G. Babde,
Assistant Professor,
Department of Commerce,
Nutan Adarsh Arts, Commerce &
Smt. M.H. Wegad Science College,
Umred, Dist. – Nagpur (MH).

D. Rupesh W. Khubalkar
Assistant Professor,
Department of Commerce,
Nutan Adarsh Arts, Commerce &
Smt. M.H. Wegad Science College,
Umred, Dist. – Nagpur (MH).

ABSTRACT

Digital Commerce is the most significant term in the current Covid-19 Pandemic. Digital commerce is playing an important role in sustaining the economic growth of several developed and developing countries in spite of worldwide lockdown. India is no exception. Digital transactions are increased at greater extent in Covid-19 period as compared to the pre Covid-19 period. Due to Covid-19 Pandemic, the overall use of the internet has increased. The transactions which were done manually are now being done online. Cyber Crime and Frauds have increased due to unsecured use of digital transactions. There is a need for continuous awareness regarding cybercrime and frauds. This paper aims to discuss the increased graph of Cyber Crime and Frauds in digital Commerce during Lockdown due to Covid-19 Pandemic.

Keywords: Digital transactions, Covid-19, Pandemic, Prevention, Lockdown

Introduction

India has the 2nd largest internet population in the world. In India, during the lockdown period digital transactions have increased tremendously. According to the RBI Report, "The share of digital transactions in the total volume of non-cash retail payments increased to 98.5 per cent during 2020- 21, up from 97.0 per cent in the previous year." The covid-19 pandemic has accelerated the digital transactions and digital payment methods such as UPI, credit/debit cards, mobile banking, etc., across the country. But, Digital Commerce has an obstacle to Cyber Crime and Cyber Fraud. Cyber crime is also increasing with the increase of digital commerce. Cyber crimes have no borders and have evolved at a pace at par with emerging technologies. The most targeted sectors for cyber crime and fraud are banking and finance. In the Covid-19 pandemic, most of the services are moving to the internet, hence, risk is extended to other sectors as well.

Data of Cyber Crime During Covid Pandemic

As per the data maintained on National Cyber Crime Reporting Portal, total 3,17,439 cybercrime incidents and 5,771 FIRs have been registered from 30 August 2019 to 28 February 2021 in the country. It includes 21,562 cybercrime incidents and 87 FIRs in Karnataka and 50,806 cybercrime incidents and 534 FIRs in



वामनदादा कर्डकांची बुद्धगीते

- डॉ. विलास गुलाबराव गजबे
नूतन आदर्श कला, वाणिज्य आणि
श्रीमती म. ह. वेगड विज्ञान महाविद्यालय, उमरेड
भ्रमणध्वनी - ९९२२९२८३४७

फुले-आंबेडकरांच्या वैचारिक प्रेरणेतून समाजमन जागे झाले सामाजिक परिवर्तनाचा लढा उभा राहिला. परिवर्तनाच्या या लढ्याला अधिक बळकट करीत समाजात फुले आंबेडकरांचा विचार रुजविण्यासाठी सत्यशोधकी आणि आंबेडकरी जलसे, कलापथके, कव्वाल आणि गीतगायन पाटू यानिर्माण झाल्या. या कलापथकातील लोककवींनी फुले - आंबेडकरांचा विचार आपल्या कविता, गीतांच्या माध्यमातून घराघरात पोहचवला या लोककवींमध्ये आंबेडकरपूर्व काळात शिवराम जानबा कांबळे, गोपाळबाबा वलंगकर, किसन फागू बनसोडे, हरिभाऊ तोरणे, भाऊ फक्कड तर आंबेडकरकालीन लोककवींमध्ये पतितपावनदास, भीमराव कर्डक, केशव सुका आहरे, रामचंद्र सोनवणे, केरू अर्जुन घेगडे, अर्जुन हरी भालेराव, केरूबुवा गायकवाड, रामचंद्र आडांगळे, शिवराम सावळाराम गडकरी, अमृतबुवा बावस्कर, अण्णाभाऊ साठे आदींचा समावेश होता. तर आंबेडकरी गीते आणि बुद्धगीते लिहिणाऱ्या गाणाऱ्या लोककवींमध्ये वामनदादा कर्डक, दलितानंद (गोविंद बाबाजी अहिरे), श्रीधर ओव्हळ, राजानंद गडपायले, दीनबंधू शेगावकर, लक्ष्मण केदार, नागोराव पाटणकर, लक्ष्मण राजगुरू, बी. काशीनंद, उत्तम मुळे, विठ्ठल उमप, प्रभाकर गवई, पांडुरंग वनमाळी प्रतापसिंग बोदडे, हरेन्द्र जाधव आदींचा समावेश आहे. आंबेडकरी चळवळीला गतिमान करण्यासाठी या लोककवींचे महत्त्वाचे योगदान राहिले आहे.

बुद्धगीते लेखनाची पार्श्वभूमी -

अस्पृश्यतेचे दाहक चटके सोसलेल्या डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांनी या नरकयातनांमधून आपली व आपल्या समाजबांधवांची सुटका व्हावी म्हणून १९३५ मध्ये नाशिकच्या येवले परिषदेत, "मी हिंदू म्हणून जन्मलो तरी हिंदू म्हणून मरणार नाही", अशी प्रतिज्ञा केली. १४ ऑक्टोबर १९५६ ला नागपूरच्या भूमीत धर्मांतर करून आपल्या लाखो अनुयायांसह बौद्ध धर्माचा स्वीकार केला. 'बुद्ध आणि त्याचा धम्म', 'बुद्ध आणि कार्ल मार्क्स', 'मुक्ती कोण पथे' यासारख्या ग्रंथांमधून बुद्धविचार आंबेडकरांनी मांडला भारतीय बौद्ध महासभेची स्थापना केली. 'भारत बौद्धमय' करण्याची त्यांची मनीषा होती. पण धर्मांतरानंतर अल्पावधीतच त्यांचे महापरिनिर्वाण झाले त्यामुळे आपल्या अनुयायांमध्ये बुद्धविचार त्यांना पाहिजे तसा रुजवता आला नाही. त्यांची मनीषाही पूर्ण होऊ शकली नाही धर्मांतराच्या ऐतिहासिक घटनेचा परिणाम चळवळीत काम करणाऱ्या लोककवींवरही झाला. बाबासाहेबांचे भारत बौद्धमय करण्याचे स्वप्न साकार व्हावे म्हणून हे लोककवी, कलावंत बाबासाहेबांना अभिप्रेत असलेला बुद्ध, बुद्धाची जीवनगाथा, बुद्धाचे तत्त्वज्ञान आपल्या गीतांमधून मांडायला लागलेत धर्मांतरानंतरच्या काळात जलसा मंडळे लयाला जाऊन त्यांची जागा कव्वाल आणि गीतगायन पाटू यांनी घेतली

**अंतर्मनाचे पदर उलगडणारी 'हराळी'****डॉ. विलास गुलाबराव गजवे**नूतन आदर्श कला, वाणिज्य आणि श्रीमती म. ह. वेगड विज्ञान महाविद्यालय
उमरेड, जि. नागपूर ई-मेल : vilas.929@gmail.com , भ्रमणध्वनी : ९९२२९२८३४७

सारांश : १९६० नंतर जे विविध साहित्य प्रवाह उदयाला आले त्यात ग्रामीण प्रवाहही निर्माण झाला. या प्रवाहाने ग्रामीणांच्या सर्वांगीण अनुभूतींना सर्जनशीलतेचा साज पांघरून शेतकरी-शेतमजूर-कष्टकरी-उपेक्षित- वंचित यांच्या जीवनाचा ध्यास घेणारा प्रवाह म्हणूनही ओळख मिळविली. ही ग्रामीण साहित्य चळवळ विकसित होत होत १९९० नंतरच्या कालखंडात ती जोरकस झाली आणि स्वतःच्या गळक्या छपरात ती कशीबशी स्वतःला सावरत समूळ व्यथा आणि वेदना नव्या दमाने मांडू लागली. त्यामुळे वंचित असलेला हा भूभाग मायबोलीचा साज लेवून मोठ्या हिमतीने आणि ताकदीने आपला टाहो साहित्य क्षेत्राच्या मांडवात प्रदर्शित करू लागला. सन १९९४ ला प्रकाशित झालेला 'हराळी' हा कथासंग्रह असाच गावकीतील ऋणानुबंधाचा आणि त्यातील आंतर्संबंधाचा ओलावा आपल्या कथेमधून मांडताना दिसतो. गावातील सुख-दुःख, शेतकऱ्याची ससेहोलपट, निसर्गाचा कहर, बारोमास कष्टणारा वर्ग या सर्व प्रश्नांना कवेत घेऊन 'हराळी' कथासंग्रह फुलला. या कथासंग्रहातील आशय फार व्यापक नाही. 'हराळी'च्या रूपाने हा कथासंग्रह गवताच्या एका पातीप्रमाणे कसा सशक्त आणि सर्वंकष ठरतो याची जाणीव कथेच्या एकूणच बाजावरून दिसून येते. स्त्रियांची होणारी कुचंबणा, पुरुषांचा स्वतःशीच सुरू असणारा संघर्ष, निसर्गाच्या कहराने त्रस्त झालेली शेतजमीन, सरकारच्या सोयीसवलतीमुळे मस्तमौला ठरलेला मजूर वर्ग आणि या सर्वांनी त्रस्त झालेला शेतकरी. या सर्वांचा जाच नको म्हणून शेतीच विकून टाकावी या निर्णयापर्यंत पोहोचणारा ग्रामस्थ. या सर्व प्रश्नांच्या ताण्याबाण्यांचा बकूब नागपुरी बोलीभाषेच्या वैभवातून वाक्प्रचार, सुभाषिते, म्हणी यांच्या देखण्या साजशृंगाराने अलंकृत होऊन आपला वेगळाच नजराणा वैदर्भीय प्रांतामध्ये समर्थ आणि सशक्तपणे भोयर मांडताना दिसतात. या कथासंग्रहाबद्दल शंकर पाटील प्रस्तावनेत म्हणतात, "अनंत भोयर त्यांच्या कथेत बोलक्या तपशिलांचा चांगला उपयोग करतात. प्रसंगांच्या उतरंडीऐवजी वारीक पण कलात्मक तपशिलांनी ते कथा साकारतात. ते करताना कृत्रिमतेची कुबडी घेत नाहीत आणि रचनेचा खटाटोपही जाणवत नाही. कथांची जडणघडण सहज होते. जीवनातल्या भडक प्रसंगांपेक्षा माणसांच्या मनातील दुःखाचा वेध घेणे आणि अशा मनाचे पापुद्रे उलगडणे हा त्यांच्या लेखणीचा एक छंद आहे."^१

प्रस्तावना : साठोत्तरी कालखंडानंतर नव्या उमेदीने जे साहित्यप्रवाह मराठी साहित्यात विकसित झाले त्यात ग्रामीण साहित्य प्रवाह जोमाने उभा राहिला. वास्तविक पाहता स्वातंत्र्यानंतर शिक्षणाचा प्रचार आणि प्रसार खेड्यातील तळागाळातील माणसापर्यंत पोहोचल्याने समाजातील संवेदनशील, सर्जनशील आणि सृजनशील माणसाची नवी पिढी उदयास आली. या पिढीला साहित्याच्या निमित्ताने आपल्या मातीची आणि आपल्या माणसाचे प्रतिबिंब साहित्यकृतीतून मांडण्याची नामी संधी चालून आली. यातूनच साहित्य लेखनास गती मिळाली. या गतीत मराठी कथा नव्या दमाने रुजायला लागली. ग्रामीण माणसाचे जग आणि त्याचे अष्टोप्रहर रावणे यातून त्याच्या भोगवट्याला आले केवळ दुःख आणि दुःख. हे दुःखच पाचवीला पुजणारा हा ग्रामीण समाज आजही विकासाच्या नावाने कोसोदूर असलेला दिसतो. गावगाड्यात आंतरसंबंध जोपासणारे ग्रामवांधव, तेला-मिठाच्या सांजेला उधार होणारे शेतमजूर आणि लाल, काळ्या शेतमाऊलीवर मातेइतकेच प्रेम करणारे शेतकरी, या प्रत्येकांचे नाजूक संबंध या साहित्य चळवळीच्या माध्यमाने ग्रामीण उंबरठ्यातून पानापानांवर उमटायला लागले. ग्रामीण कथा हळूहळू विकसित होत असताना आणि तिच्यातील 'गावरान मेवा' सर्वांना लोभसवाना वाटू लागल्याने अलीकडे नवोदोत्तरी कालखंडानंतर बोलीभाषेला आलेल्या महत्त्वामुळे ग्रामिणांच्या नैसर्गिक सुखदुःखापासून तर आपापसांतील ताणतणावापर्यंत हरेक पदर ही ग्रामीण कथा उलगडायला लागली. याच नात्यातून विकसित झालेला अनंत भोयर यांचा 'हराळी' हा कथासंग्रह.

'हराळी' या कथासंग्रहात रोजमर्याच्या जीवनात शेतकऱ्याची उडालेली भंबेरी आणि मजूर वर्गाकडून होणारी त्याची ससेहोलपट यातील द्वंद्व अतिशय खुबीने रेखाटत असून ग्रामिणांच्या नाजूक संबंधांपासून तर त्यांच्या चुलीपर्यंतच्या गोष्टींचाही समावेश भोयर यांनी बारकाईने या संग्रहात नोंदवलेला आहे. म्हणूनच हा कथासंग्रह अंतर्मनाचे पदर उलगडून वाचकांच्या मनाला चटका लावून जातो .